 ISSN : 2583-2948

संपादकीय

ज्ञानं तु द्विविधं प्रोक्तं शाब्दिकं प्रथमं स्मृतम् ।
अनुभवाख्यं द्वितीयं तुं ज्ञानं तदुर्लभं नृप ॥

(अर्थात ज्ञान के दो प्रकार हैं, प्रथम – शाब्दिक अर्थों वाला ज्ञान और दूसरा अनुभव से प्राप्त ज्ञान जो कि मिलना बहुत दुर्लभ होता है) अनुभव का ज्ञान ही भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्रोत है जो मौखिक परंपरा से निष्पन्न है। मौखिकी परंपरा का प्रादुर्भाव हमारे लोकांचल से हुआ और आज तक समाज में इनका वैशिष्ट्य है। विगत तीन - चार वर्षों से भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति भारत सरकार और कुछ प्रबुद्धवर्ग की जिज्ञासा ने देशभर में इस संदर्भ में लोगों को जागरूक किया है और कर रहे हैं । अब इस अभियान में भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र के साथ शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) आदि भी जुड़ गए हैं। देश भर से प्राध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है और उनसे अपेक्षा रखी जा रही है कि वे अपने क्षेत्र के अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षित करें । इस कार्य को लेकर देशभर के लोगों की अलग- अलग प्रतिक्रियाएँ आ रही हैं – कुछ स्करात्मक तो कुछ नकारात्मक भी, परंतु इस शुभ संकल्पना का उद्देश्य मात्र इतना ही है कि – विकास, शोध, विज्ञान, चिकित्सा, अर्थ व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था आदि के जितने भी गूढ़ तथ्य हैं, वे सब हमारी अपनी धरोहर हैं। हमारे देश के मनीषियों ने अपनी पुस्तकों में विस्तार से इनकी जानकारी दी है। मुगल और ब्रिटिश शासनकाल के दौरान जो अंतराल आया और जिस प्रकार हम अपनी ही जड़ों से विलग होते गए, उसकी भरपाई कैसे हो? अपने जड़ों की ओर कैसे लौटा जाये? अपनी संस्कृति – सभ्यता पर अभिमान कैसे किया जाये? भटकती, गुमराह होती और अर्धज्ञान के उपार्जन में मदांध, अपनी युवा पीढ़ी को कैसे उबारा जाये? आदि को दृष्टि में रखकर इसका श्री गणेश किया गया है। शुभ संकल्प का परिणाम शुभ ही होता है। कुछ दीर्घकालिक रचने या विनिर्माण करने अथवा स्थापित करने में थोड़ा बहुत समय लगता ही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को भी जन – जन तक पहुँचाने और शास्त्रीय परंपरा के अध्ययन और उसमें परिव्याप्त गूढ़ता को समझने में थोड़ा सा समय लगेगा परंतु इसका भविष्य स्वर्णिम एवं जनहितोपयोगी है।

डॉ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी